विद्यार्थी वर्ग में सोशल मीडिया जनित बदलते सामाजिक मूल्य सम्बंधी चेतना : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

–सुनीता शर्मा* एवं डॉ. योगेन्द्रप्रसाद त्रिपाठी**

*शोधछात्रा–समाजशास्त्र

**शोध पर्यवेक्षक– प्रोफेसर : समाजशास्त्र विभाग

का.सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या

सारांश

समाज में प्रारम्भ से ही मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा जाता है। और प्रत्येक सामाजिक व्यक्ति एक दूसरे व्यक्ति के बीच रहना पसंद करता है। क्योंकि दो या दो से अधिक व्यक्ति के अंतःक्रिया से ही समाज का निर्माण होता है। विकसित समाज के इस दौर में मनुष्य अपनी बुद्धि और कौशल से सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया। जिसके द्वारा न केवल संपूर्ण समाज का विकास हो सके बल्कि समाज में व्याप्त अनैतिक और असामाजिक तत्वों पर नियंत्रण रख सके। बदलते समाज में सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों ,आदर्शो इत्यादि मानक नियम भी तेजी से परिवर्तित हो रहे हैं। हमारे समाज में हो रहे बदलाव में सोशल मीडिया के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। सिर्फ इसमें सकारात्मक और नकारात्मक के प्रति ध्यान रखना है।

मूलशब्द– समाज, सामाजिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य, सोशल मीडिया, युवा वर्ग।

प्रस्तावना–

प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी परिवार का सदस्य होता है। सबसे पहले परिवार में ही शिक्षा प्राप्त होती है। इसलिए परिवार व्यक्ति के लिए प्रथम पाठशाला होता है जिसमें रहकर मनुष्य सामाजिक व्यक्ति की ओर अग्रसर होता है। व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक है,समाज के बिना व्यक्ति का कोई आस्तित्व नहीं और न ही व्यक्ति के बिना समाज की कोई कल्पना कर सकता है। जितना समाज व्यक्ति पर निर्भर है उतना ही व्यक्ति भी समाज पर निर्भर है। व्यक्ति को समाज में व्याप्त सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों ,आदर्शों परम्पराओं के मानक के अनुसार ही कार्य करने की सीख मिलती है जिससे समाज में व्यवस्था बनी रहे। समाज के प्रत्येक व्यक्ति से सामाजिक मूल्यों के अनुरूप कार्य करने की अपेक्षा की जाती है क्योंकि इन सामाजिक मूल्यों और नियमों के विपरीत कार्य करने से समाज में अब्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। सामाजिक मूल्यों में जो बदलाव हो रहा है वह संरचनात्मक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण बदलाव है। जो समाज में व्यक्ति के कार्यों को प्रभावित करतें है।[1]

समाज में हमेशा से मीडिया एक महत्वपूर्ण स्तम्भ रहा है जो जनता की राय के निर्माण से लेकर हर एक घटनाओं की सूचना भी प्रदान करता है । जिसका दायरा सोशल मीडिया के उद्भव से और बढ़ गया है।[2] परिवर्तन प्रकृति का एक शास्वत नियम है। वर्तमान समय में बदलते समाज के स्वरूप में अन्य पहलूओं के साथ सोशल मीडिया का भी महत्वपूर्ण योगदान है। समाज में मनुष्य के विकसित ज्ञान, बढ़ते वैज्ञानिक खोज, तकनीकी और सोशल मीडिया के सार्वभौमिक उपयोग के कारण ही आज परिवार और समाज के प्रत्येक पहलू में परिर्वतन हुआ है और हो भी रहा है। वर्तमान समय में जहां समाज तेजी से परिवर्तित हो रहा है, जहां सामाजिक

परिर्वतन के लिए उत्तरदायी कारको में आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, प्रौद्योगिकी कारको को कार्ल मार्क्स, मैक्सवेबर, सोरोकिन और आगबर्न द्वारा बताया गया है वहीं पर डेनियल लर्नर, गौंड, फेवेस्लो, रेमण्ड विलियम आदि ने बदलते समाज के लिए मीडिया को उत्तरदायी माना हैं। सोशल मीडिया सामाजिक संबंधों के साथ–साथ सामाजिक –सांसकृतिक मूल्यों में परिर्वतन कर सामाजिक जीवन के सामान्य से विशिष्ठ पहलू तक को प्रभावित किया है। सोशल मीडिया के कारण ही विश्व के सम्पूर्ण देश की सामाजिक ,सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक और भौगोलिक सीमाएं सिमट गई हैं। सोशल मीडिया समाज के प्रत्यके स्तर के व्यक्ति के जीवन शैली खान–पान, रहन–सहन, वेशभूषा को प्रभावित किया है।

युवा शक्ति देश का वर्तमान है तथा भूत और भविष्य की एक सेतू भी है। मानव सभ्यता सदियों से विकसित हुई है हर पीढ़ी की अपनी सोच और विचार होता है जो समाज के विकास की दिशा में योगदान देते हैं। युवा वर्ग प्रतिभा एवं क्षमता वाला होता है। हमारे देश का एक बड़ा हिस्सा युवा वर्ग का है जिसकी आयु 15 से 40 वर्ष की है। व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज और समाज से ही राष्ट्र का निर्माण होता है। देश तभी सशक्त और मजबूत बनता है जब स्वस्थ्य समाज का निर्माण होता है। किसी भी युवक के भविष्य का निर्धारण करने के लिए दो चीजे आवश्यक है पहला उसका व्यक्तित्व विकसित हो दूसरा उसे उचित अवसर प्राप्त हो।

सोशल मीडिया जनित सामाजिक मूल्यों के बदलते आयाम –

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में संचार का सबसे सशक्त माध्यम बनकर उभरा सोशल मीडिया द्वारा समाज का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित है। विभिन्न संस्कृति के लोगों को आपस में जोड़ रहा है। प्रत्येक वर्ग के लोगों में, प्रत्येक घरों में सोशल मीडिया के साधन उपलब्ध होने के कारण व्यक्ति के जीवन का प्रत्येक क्षण ,हर एक पहलू प्रभावित हे। बदलते परिवेश में सोशल मीडिया का प्रत्यक्ष प्रभाव समाज और परिवार पर दिख रहा है[3]। विद्यार्थी वर्ग वो वर्ग है जो सबसे जयादा सपने देखता है और सपने साकार करने के लिए जी–जान से मेहनत भी करता है। सोशल मीडिया द्वारा विद्यार्थी वर्ग पर सकारात्मक प्रभाव को देखें तो युवा वर्ग के लिए अपनी पहचान को संपूष्ट करने और नई जगह बनाने के लिए किशोरावस्था ही ऐसा समय होता है। सोशल मीडिया युवा वर्ग को समाज में अपनी विशिष्ट पहचान विकसित करने हेतू एक मंच प्रदान करता है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स नें युवाओं के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाया है। सोशल मीडिया युवा वर्ग को अधिक प्रभावित किया है।[4] सामाजिक मूल्यों के साथ ही नैतिक मूल्य ,सांस्कृतिक मूल्य, पारिवारिक, आर्थिक, शैक्षिक इत्यादि पक्षों में कुछ सालों से काफी बदलाव आया है। सोशल मीडिया सूचनाओं के आदान–प्रदान का सशक्त साधन होने के कारण सम्पूर्ण विश्व एक वैश्विक गांव बन गया है। आज विश्व की प्रत्येक सूचना एक क्लिक पर पलक झपकते ही विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुॅव जाता है। सोशल मीडिया द्वारा हमारी संस्कृति के भौतिक और अभौतिक दोनो पक्ष प्रभावित है। हमारे समाज में प्रचलित सामाजिक मूल्य, आदर्श, प्रतिमान, परम्पराओं, रूढ़ियों, जनरीतियों आदि पर काफी प्रभाव पड़ा है। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति को भारतीय सभ्यता और संस्कृति में जोर –शोर से अपनाया जा रहा है।[5] विद्यार्थियों के अधिक समय तक सोशल मीडिया के उपयोग से नैतिक और सामाजिक मूल्य का हास हो रहा है। विद्यार्थी जिनके कंधों पर देश का भविष्य टिका है जो देश के भावी कर्णधार है सोशल मीडिया के उपयोग के कारण ही अपनी सभ्यता और संस्कृति तथा सामाजिक मूल्यों में

आदर्श, नियम अपनाने के अलावा पश्चिमी सभ्यता ,संस्कृति और मूल्य को अपनाने पर जोर दे रहे है।[6] ज्ञान अर्जित करने के लिए समाज में विद्यमान अनेक सामाजिक दशाओं से परिचित होना, सरकारी कायों के संबंधों में सूचनाओं का आदान–प्रदान होना, सामाजिक समस्याओं पर तर्क–वितर्क की प्रतिक्रिया की सूचना प्राप्त होना सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण आसान हो गया है। वर्तमान समय में विश्व के किसी भी समाज में या देश में सूचनाओं का आदान–प्रदान एक दूसरे के बीच सम्भव है।[7]

संचार व्यक्ति या समूह की भावनाओं और संवेगों को अन्य व्यक्तियों या समूह तक पहुंचाने की ऐसी प्रक्रिया है जिससे सूचनाओं को प्राप्त कर उसकी प्रतिक्रिया प्रदान की जाती है।[8] मानव जीवन में मूल्यों का अधिक योगदान होता है। समाज में सही –गलत ,अच्छे–बुरे की परख इन्हीं आधरों पर की जाती है। प्रत्येक मनुष्य से समाज में व्याप्त इन सामाजिक मूल्यों के अनुरूप ही सामाजिक और मानवीय मूल्यों का विकास होता है। जो परिवार और समाज से सभी सामाजिक मूल्यों को प्राप्त करता है। बदलते परिवेश में सामाजिक मूल्यों में भी बदलाव अनिवार्य रूप से होता है। परिवर्तन प्रकृति का सार्वभौमिक नियम है। समाज में विकास और उन्नति का मार्ग परिवर्तन से ही खुलतां है। वर्तमान में हो रहे परिवर्तन से पूरी दुनिया प्रभावित है। मनुष्य का जीवन सरल होता जा रहा है। जिसका वजह सुख सुविधाओं में हो रहे लगातार बृद्धि है। सभ्यता और संस्कृति के प्रभावित होने के साथ ही साथ संयुक्त परिवार के स्थान पर एकांकी परिवार का उदय हुआ। लोगों में जागरूकता उत्पन्न होने के कारण समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियां एवं अंधविश्वास जैसी कुप्रथाएं कम हुई। जिससे बदलते समाज के सकारात्मक रूप का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से समाज पर पड़ा है।[9]

भविष्य में होने वाले विकास और प्रगति के निर्धारण की कल्पना बिना सामाजिक मूल्यों के नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक समाज की सामाजिक मूल्य आदर्श, प्रतिमान, मापदण्ड, भिन्न–भिन्न होते है। यह सामाजिक मूल्य, मापदण्ड, आदर्श ही समाज में मूल्यांकन का आधार होता है। जिससे समाज में अच्छाई और बुराई, मान्य और अमान्य की परख की जाती है। किसी भी समाज में विद्यमान उन विचारों उद्देश्यों और सिद्धान्तों को हम सामाजिक मूल्य कहते है जिन्हें समाज के अधिकांश सदस्य मानते है। जिनको समाज में बनाये रखने के लिए बड़े से बड़ा त्याग और वलिदान करने के लिए तैयार रहते है। कुछ हमारे सामाजिक मूल्यों को व्यक्त करने वालो में प्रजातन्त्र ,मातृभूमि ,राष्टगान आदि है।[10]

प्रत्येक समाज में विद्यमान सामाजिक मूल्य भिन्न–भिन्न होते हुए भी उस समाज की नींव होती है। लेकिन सोशल मीडिया के कारण ही यह सामाजिक मूल्य रूपी नीव बदलने लगी है। जिससे मानव जीवन में अलग – अलग सामाजिक मूल्यों का सम्मिश्रण हुआ है । पश्चात्य सभ्यता, संस्कृति और मूल्यों का भारतीय सभ्यता, संस्कृति और मूल्यों पर काफी प्रभाव पड़ा है। आज के परिवेश में समाज में विकास के लिए यह ठीक है क्योंकि आज मीडिया के द्वारा ही भ्रष्टाचार की पोल खुल रही है। नये ग्रहों की खोज और चांद तक की यात्रा की सूचना प्राप्त हो रही है। खेल संस्कृति में परिवर्तन आया है। प्रत्येक परिवार में आज सोशल मीडिया उपलब्ध होने के कारण इसका प्रभाव पारिवारिक रिस्तों के साथ –साथ मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर पड़ा है। एक तरफ सोशल मीडिया का प्रयास समाज की सच्चाई का दर्पण लोगों तक पहुॅचाना

है वही दूसरी तरफ मीडिया अपनी टी.आर. पी. के लिए हर घटना को हर एक तथ्य को तोड़–मरोड़ कर मसालेदार न्यूज की तरह पेश करती है। जिससे वास्तविक समस्या उजागर नहीं हो पाती है। अतः मीडिया को सामाजिक और नैतिक दायित्वों को ध्यान में रखकर अपना कार्य करना चाहिए जिससे लोगों तक सत्य पहुँच सके और समाज में विद्यमान मूल्यों और आदर्शों पर किसी तरह का विपरित प्रभाव न पड़े।[11]

समस्या कथन– ''महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया जनित बदलते सामाजिक मूल्य सम्बंधी चेतना : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन''।

शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का प्रयोग–

सोशल मीडिया –मार्शल मैक्लूहान के अनुसार मीडिया दो बिन्दुओं को एक दूसरे से जोड़कर मध्यस्थता का कार्य करने वाला जन संचार का एक साधन है जो एक विचारधारा में विभिन्न समूहों के स्रोताओं को जोड़ता है। सोशल मीडिया एक दूसरे के संवादों को अन्य दूसरे तक पहुंचाने का सशक्त साधन है जिसकी प्रतिक्रिया तीव्र गति से प्राप्त होती है। जिसके कारण सूचनाओं का बदलते पीरवेश में अत्यधिक महत्व है।[12]

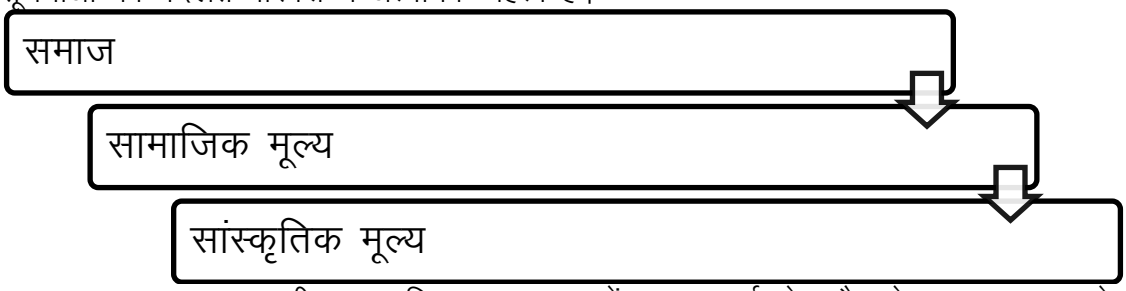

समाज उन मानवीय सामाजिक अन्तःसम्बन्धों का सम्पूर्ण क्षेत्र है जो एक समुदाय के व्यक्तियों के बीच पाया जाता है जो उन्हें एक व्यवस्था के अन्दर संगठित नियंत्रित और स्थिर रखता है। समाज का वास्तविक आधार सामाजिक सम्बन्ध है इस तरह समाज मानवीय सम्बन्धों का गतिशील संगठन है। सामाजिक मूल्य सामाजिक संबंधों को संतुलित करने तथा सामाजिक व्यवहारों में एकरूपता उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होते है। जो समाज के सदस्यों के आंतरिक भावनाओं पर आधारित होते है।[13] सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य जीवन को एक मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करते है। मूल्यों की विवेचना सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के रूप में की जाती है। किसी भी समाज का आधार उसका मूल्य होता है। समाज को एकता के बंधंन में बॉधने वालें मूल्य ही समाज की शक्ति बनते हैं। अतः सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को प्राथमिकता देनी होगी।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।
2. महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया जनित बदलते सामाजिक मूल्यो के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों से प्रभावित समाज का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएंः–

1. महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया जनित बदलते सामाजिक मूल्यो के प्रभाव के अध्ययन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों से प्रभावित समाज का महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण के अध्ययन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

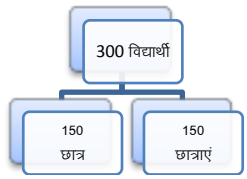

अनुसंधान अध्ययन विधि– प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त चर– स्वतंत्र चर– सोशल मीडिया, छात्र एवं छात्रायें।

आश्रित चर –समाज, सामाजिक एवं ,सांस्कृतिक मूल्य।

अध्ययन का न्यादर्श – न्यादर्श किसी सम्बन्धित जनसंख्या (समग्र) का लघु रूप होता है, जिसे अध्ययन या शोध हेतु चुना जाता है।

शोध कार्य हेतू कानपुर जिले के महाविद्यालय स्तर के 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

स्वनिर्मित उपकरण :–

शोध में सम्बन्धित क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करने के लिए स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का संकलन एवं वर्गीकरण–

सांख्यिकीय वैज्ञानिक विधि की वह शाखा है जो प्रदत्तों के आंकलन विश्लेषण तथा निर्वचन से सम्बन्धित आदतों का अध्ययन करती है। प्रस्तुत शोध प्राप्तांकों की गणना 'प्रतिशत' के आधार पर की गयी है।

अध्ययन का परिसीमांकन :–

प्रस्तुत शोध कार्य उत्तर प्रदेश के कानपुर जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं तक ही सीमित है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

सारणी–1, संस्कृतियों के विकास में सोशल मीडिया की सकारात्मक भूमिका

विद्यार्थी	सहमत	असहमत	कोई नहीं	सहमत प्रतिशत	असहमत प्रतिशत	कुल
छात्र	90	52	8	60	34.667	150
छात्राऐ	68	56	26	45.333	37.333	150
कुल	158	108	34	52.667	36	300

प्राप्त आँकड़ों से पता चलता है कि संस्कृति के विकास में सोशल मीडिया की सकारात्मक भूमिका में सहमत का प्रतिशत अधिक है। तदोपरांत असहमत का प्रतिशत है ,दोनो में से कोई नहीं मानने वालो की संख्या सबसे कम है। अतः सारणी –1 से स्पष्ट है कि सकारात्मक भूमिका को मानने वालों की संख्या अधिक है।

सारणी–2, सोशल मीडिया जनित बदलते सामाजिक मूल्यों के प्रभाव

विद्याथी	सहमत	असहमत	कोई नहीं	सहमत प्रतिशत	असहमत प्रतिशत	कुल
छात्र	110	32	8	73.333	21.333	150
छात्राएं	124	20	6	82.667	13.333	150
कुल	234	52	14	78	17.333	300

साथ ही इसके नकारात्मक पहलू से भी समाज प्रभावित है। अतः जरूरत है इसके सकारात्मकता और नकारात्मकता पर विचार करने की ताकि इसका सही उपयोग हो सके। इससे यह स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया का बदलते सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों में महत्वपूर्ण भूमिका है। जो विद्यार्थियों में सोशल मीडिया की संस्कृति संरक्षण और शिक्षा के प्रति सकारात्मक भूमिका है।

सन्दर्भ सूची–

1. कटिहार डा. धर्मेंद्रः Changing social value,www.google.com, www.bollotboxIndia.com.
2. Social Media for Social Transformation: www.google.com,sarishankar.org
3. मुकर्जी रविन्द्र नाथ : सामाजिक विचारधारा काम्ट से मुकर्जी तक विवेक प्रकाशन यू ए जवाहर नगर नई दिल्ली 1984।
4. सोशल मीडिया और युवा भारतीय समाज : www.drishtiias.com-2021, सोशल मीडिया का युवा वर्ग पर प्रभाव www.ijcrt.org.
5. कुमारी सुनीता : बदलते परिवेश में सोशल मीडिया की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, एकेडमिक सोशल रिसर्च पब्लिकेशन,पृष्ठ न0,2,3।
6. जैन डॉ. अमिता : शोध पत्र, सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन,पब्लिकेशन–Internation Journal of Education,modern management,applied scince&social scince pg no.1
7. सिंह अरविन्द कुमार : इन्टरनेट एवं न्यू मीडिया टेक्नोलॉजी आदि बुक्स 23/4 शक्ति नगर नई दिल्ली ।
8. चोपड़ा लक्ष्मेंद्रा : जनसंचार का समाजशास्त्र : आधार प्राइवेट लिमिटेड पंचकुला, 2002।
9. भूषण विद्या सचदेवा डी0 आर ,मुकर्जी रविन्द्र नाथ समाजशास्त्र के सिद्धान्त, सामाजिक शोध व सांख्यिकी अथवा सामाजिक अनुसंधान की विधियां, विवेक प्रकाशन जवाहर नगर नई दिल्ली 7।
10. www.google.com : सोशल मीडिया और समाज का ध्रुवीकरण सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव।
11. Mcluhan Marshall (1964) Understanding media: The extension of man megrow Hill Critical Edition gingko Press.
12. दुबे श्यामा चरण : शिक्षा, समाज और भविष्य, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 2/38 अंसारी मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली ।
13. मुकर्जी रविन्द्र नाथ : उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धान्त,प्रकाशक विवके प्रकाशन, यू.ए.जवाहरनगर, नई दिल्ली।